1992 में पहली बार पकड़ा गया था बडगाम निवासी अब्दुल गनी डार को। जेल से रिहा होने के बाद फिर आतंकी गतिविधियों में सक्रिय हो गया। वर्ष 2002 में उसे बीएसएफ ने लालचौक के पास पकड़ा था।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शुक्रवार 14 फरवरी 2020

टिड्डियों से दुनिया में फैल सकती है भुखमरी

150 अंडे
एक टिड्डी एक दिन में दे देती है

20 गुणा
इतनी रफ्तार से अपनी जनसंख्या बढ़ाती हैं टिड्डियां

दुनिया एक तरफ कोरोना वायरस के खौफ में है तो दूसरी तरफ 'प्लेग' की चपेट में है। थोड़ा रुकें, 'प्लेग' को चूहे से जुड़ी वाली महामारी न समझें, बल्कि यह टिड्डी दलों ने जैसे हालात पूरी दुनिया में पैदा कर दिए हैं उसे बताने वाला मात्र एक विशेषण है, जिसे संयुक्त राष्ट्र की संस्था खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने इस्तेमाल किया है। एफएओ ने आधिकारिक रूप से चेतावनी दी है कि टिड्डियों के कारण दुनिया भुखमरी के कगार पर पहुंच रही है। हालात यह है कि 60 देश टिड्डी दलों के हमलों से पीड़ित हैं, जो कोरोना वायरस से पीड़ित देशों की संख्या से कही अधिक है।

पाक गंभीर संकट में

हमारा पड़ोसी पाकिस्तान तो टिड्डियों के आगे घुटने टेकने की स्थिति में पहुंच गया है और इमरान खान सरकार ने आपातकालीन कदम भी उठाए हैं। महंगाई सातवें आसमान पर पहुंच गई है। पाकिस्तान और सोमालिया ने परेशान होकर इसे राष्ट्रीय आपदा घोषित कर दिया है। भारत में भी हालात खराब हैं। गुजरात और राजस्थान में संकट को राज्य सरकारों ने स्वीकार कर लिया है, जबकि अब पंजाब और हरियाणा में टिड्डी दल पहुंच गए हैं, जो पूरे भारत को खाना खिलाते हैं।

अच्छा मानसून बन गया मुसीबत

अफ्रीका की तरफ से आने वाली टिड्डियों को नम मौसम पसंद है।भारतीय उपमहाद्वीप में वर्ष 2019 में मानसून अच्छा रहा। मानसून जल्दी आया और देर तक रहा। सितंबर, अक्टूबर और नवंबर में इस बार पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में हालात टिड्डियों के माकूल रहा और अंजाम दिसंबर-जनवरी में भयानक रूप से सामने आया।

पश्चिमी विक्षोभ ने हालात किए बदतर

सामान्य रूप से टिड्डी दल नवंबर के अंत तक भारत छोड़ देते हैं और ईरान की तरफ चले जाते हैं। हालांकि इस बार दिसंबर और जनवरी में भी अच्छी बारिश हुई, जिसका कारण पश्चिमी विक्षोभ था। पश्चिमी विक्षोभ में हवा अफगानिस्तान-पाकिस्तान की तरफ से आती है। ऐसे में टिड्डी दल भारतीय उपमहाद्वीप में ही रह गए।

बहुत पेटू हैं टिड्डियां

एक सेमी. से लेकर अधिकतम चार सेमी लंबी टिड्डियां किस कदर भूखी होती हैं, इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि छोटे आकार (चार करोड़ टिड्डियां) का एक टिड्डी दल एक दिन में उतना खाद्य पदार्थ खा जाता है, जिससे 35 हजार लोगों का पेट आसानी से दिन में दो बार भरा जा सकता है।

खुद खाना बन जाती हैं टिड्डियां

टिड्डियों को पूरी दुनिया की विभिन्न हिस्सों में खाद्य पदार्थ के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है, खासकर एशिया और अफ्रीका में। चीन और आसपास के देशों में इन्हें खाया जाता है।

कठिन काम है नियंत्रण पाना

महंगे कीटनाशकों की मदद से इन्हें नियंत्रित किया जाता है, लेकिन बड़े भाग में ज्यादा कीटनाशकों का इस्तेमाल बहुत महंगा साबित होता है, जिसे भारत जैसे देश के किसान नहीं उठा पाते हैं। वैसे शोर मचाकर भी टिड्डियों को भगाने की परंपरा है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। गुजरात, राजस्थान में इन्हें भगाने के लिए थाली बजाई जाती है।

15 करोड़
टिड्डियां हो सकती हैं मध्यम आकार के एक दल में

40%
फसल पाकिस्तान में नष्ट हो चुकी है

35 हजार
हेक्टेयर में लगी फसल भारत में हो चुकी है बर्बाद

3.5 लाख
हेक्टेयर में लगी फसल बर्बादी के कागर पर

5 करोड़
लोगों का पेट भर सकती थीं दुनिया में खराब हुई फसलें

01 हजार वर्ग किमी
क्षेत्र की फसलों को टिड्डियों का बड़ा दल एक दिन में कर सकता है चट

जम्मू-कश्मीर उन्नति और बेहतरी की ओर अग्रसर

मिला साथ ▶ विदेशी राजनयिकों ने जम्मू में प्रशासनिक अधिकारियों से की मुलाकात, कहा-लोगों के जीवन में हो रहे हैं सकारात्मक बदलाव

जम्मू के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात कर लोगों की आकांक्षाओं को भी जाना

राज्य ब्यूरो, जम्मू

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद-370 हटाने के बाद उपजे हालात का जायज लेने दो दिवसीय दौरे पर पहुंचे विदेशी राजनयिकों ने गुरुवार को जाने से पूर्व कहा कि जम्मू-कश्मीर बेहतरी और उन्नति की ओर अग्रसर है और यहां जरूरी परिवर्तन हो रहे हैं। इससे लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आएगा।

दो दिवसीय दौरे के दौरान 25 विदेशी राजनयिकों ने बुधवार को कश्मीर घाटी का दौरा किया था, जबकि गुरुवार को उन्होंने जम्मू पहुंचकर विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समाज के बुद्धिजीवी लोगों से भी मुलाकात की। विदेशी राजनयिकों के दल में जर्मनी, कनाडा, फ्रांस, न्यूजीलैंड, मेक्सिको, इटली, अफगानिस्तान, ऑस्ट्रिया, उज्बेकिस्तान, पोलैंड, डॉमनिक रिपब्लिक, युगांडा, चेकोस्लोवाकिया, नीदरलैंड, नामीबिया, रवांडा और खाड़ी देशों के प्रतिनिधि शामिल थे।

इससे पूर्व गुरुवार सुबह जम्मू पहुंचे यूरोपीय संघ, लैटिन अमेरिका और खाड़ी देशों के राजदूतों, राजनयिकों ने जम्मू में उपराज्यपाल जीसी मुर्मू, उच्च न्यायालय की मुख्य न्यायाधीश गीता मित्तल व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठकें की। इसके अलावा पूरा दिन जम्मूवासियों के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात कर जनआकांक्षाओं को जाना। उन्होंने शाम पांच बजे तक जम्मू शहर के एक होटल में स्थानीय व्यापारियों, समाजसेवी संगठनों के प्रतिनिधियों से मुलाकात कर जनआकांक्षाओं, पर्यटन, विकास, खेल और शिक्षा जैसे मुददों पर उनका पक्ष जाना। दौरे पर आए विदेशी मेहमानों ने स्थानीय लोगों से पाक प्रायोजित आतंक, घाटी से विस्थापित हुए कश्मीरी पंडितों और पश्चिम पाकिस्तान के रिफ्यूजियों के दर्द को भी समझा। लोगों ने बताया कि अनुच्छेद 370 हटाकर पुरानी गलती सुधारी है। इसके अलावा लोगों ने कश्मीर केंद्रित सरकारों द्वारा जम्मू से किए भेदभाव की जानकारी भी दी। प्रशासनिक अधिकारियों के साथ हुई बैठक में जम्मू-कश्मीर सरकार के मुख्य सचिव बीवीआर सुब्रमण्यम ने राजनयिकों को अनुच्छेद 370 हटने के बाद विकास और पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देकर लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की मुहिम की जानकारी दी।

आतंकवाद के मुद्दे पर जानी लोगों की राय : विदेशी राजनयिकों ने कश्मीरी पंडितों, सभ्य सामाज, गुलाम कश्मीर के रिफ्यूजियों, वाल्मीकि समाज, गुज्जर-बक्करवालों, शिक्षाविदों, पश्चिम पाकिस्तान के रिफ्यूजियों, गोरखा समाज के प्रतिनिधियों ने अलग-अलग बैठकें कर जम्मू-कश्मीर के बदलाव पर उनकी राय भी जानी। इसके अलावा विदेशी राजनयिकों ने एक साथ प्रतिनिधिमंडल में शामिल 37 लोगों से अनुच्छेद 370 हटने, शासन से उम्मीदों व पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद जैसे मुद्दों पर राय ली। इस दौरान लोगों ने कश्मीर केंद्रित सरकारों के कार्यकाल में जम्मू को रोजगार, विकास में नजरअंदाज करना और पश्चिम पाकिस्तान के रिफ्यूजियों को जम्मू-कश्मीर की नागरिकता से वंचित रखने के मुद्दे भी उठा।

नागरिकता संशोधन कानून पर हालात जानें : विदेशी राजनयिकों ने अनुच्छेद-370 हटने से उपजे हालात से अधिक महत्व नागरिकता संशोधन कानून पर जम्मू के लोगों की राय जानने पर दिया। लोगों ने उन्हें बताया कि पड़ोसी देशों में प्रताड़ित अल्पसंख्यकों को देश की नागरिकता देने में कोई बुराई नहीं है, इसी लिए इस मुद्दे पर जम्मू-कश्मीर में कुछ नहीं हुआ। इस कानून से पश्चिम पाकिस्तान से 70 साल पहले आए रिफ्यूजी बनकर रह रहे लोगों के साथ इंसाफ हुआ है। विदेशी राजनयिकों ने भारत के प्रयासों की सराहना की और कहा कि आगे भी वह ऐसे ही प्रयास जारी रखेगा।

जम्मू-कश्मीर के दौरे पर पहुंचे विदेशी राजदूतों दूसरे 25 सदस्यीय दल ने गुरुवार को उप राज्यपाल जीसी मुर्मू (बाएं से दूसरे) के साथ बैठक की। एएनआइ

मेक्सिको के राजदूत लोफे ने कहा-आ रही शांति

भारत में मेक्सिको के राजदूत एफएस लोफे ने कहा है कि जम्मू कश्मीर में शांति आ रही है। इसकी स्थिति कश्मीर और जम्मू में बैठकें करने के बाद स्पष्ट हुई है। कुछ मुश्किलें हैं, लेकिन लोग बेहतर हालात चाहते हैं और अधिकारी उसी कोशिश में जुटे हैं। वहीं, भारत में डॉनमिक रिपब्लिक के राजदूत हैंस डेननबर्ग कास्टेलानोस ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में विकास के रोडमैप पर काम हो रहा है। प्रशासन के पास पूरा खाका है। उन्होंने कहा कि उपराज्यपाल, मुख्य न्यायाधीश व मुख्यसचिव से बैठकें कामयाब रहीं।

सेना ने दी सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : केंद्र शासित जम्मू-कश्मीर राज्य के हालात का जायजा लेने आए यूरोपीय संघ, लैटिन अमेरिका और खाड़ी देशों के लगभग 25 राजदूत व राजनयिकों ने गुरुवार को जम्मू रवाना होने से पूर्व चिनार कोर कमांडर सहित सेना के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान चिनार कोर कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल केजेएस ढिल्लों ने राजनियकों और राजदूतों को कश्मीर घाटी में पाक प्रायोजित जिहादी तत्वों की गतिविधियों, एलओसी पर पाक द्वारा बार-बार जंगबंदी के उल्लंघन करने और आतंकियों की घुसपैठ की कोशिशों और उन्हें नाकाम बनाने की भारतीय सेना की रणनीति से अवगत कराया। विदेशी राजदूतों और राजनियकों द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब देते हुए कोर कमांडर ने उन्हें घाटी के ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में सेना द्वारा संचालित स्कूलों, सद्भावना अभियान और स्थानीय युवकों को आतंकियों की चंगुल से मुक्त करने के प्रयासों से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 की समाप्ति और जम्मू कश्मीर के पुनर्गठन होने के बाद कश्मीर में अलगाववादी तत्वों की लोग खुलकर नकारने लगे हैं।

पुलवामा में आज देश को समर्पित होगा शहीद स्मारक स्थल

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : पुलवामा के लिथपोरा में गत वर्ष आत्मघाती हमले में शहीद हुए 40 सीआरपीएफ जवानों के नाम पर बने शहीद स्मारक को शुक्रवार को राष्ट्र के नाम समर्पित किया जाएगा। यह स्माकर स्थल लिथपोरा स्थित सीआरपीएफ शिविर में है। सीआरपीएफ के अतिरिक्त महानिदेशक जुल्फिकार हसन ने कहा कि 14 फरवरी 2019 को शहीद हुए जवानों को यह श्रद्धांजलि है। शहीद स्मारक स्थल पर सभी शहीदों के नाम व तस्वीरें होंगी। इसके साथ स्मारक स्थल पर सीआरपीएफ का लक्ष्य सेना और निष्ठा लिखा है। यह दुर्भाग्यजनक घटना थी। इससे हमने अपने लिए एक सबक लिया है। हम हमेशा से ही अपने जवानों व अधिकारियों की आवाजाही के समय पूरी सतर्कता बरतते रहे हैं।

जेके-पीएसए को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दाखिल करके जम्मू-कश्मीर जन सुरक्षा अधिनियम (जेके-पीएसए), 1978 को चुनौती दी गई है। अनुच्छेद-370 हटने के बाद इसी कानून के तहत कई नेताओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया गया है। सुप्रीम कोर्ट में यह याचिका जम्मू-कश्मीर नेशनल पैंथर्स पार्टी के मुख्य संरक्षक भीम सिंह ने दाखिल की है। वह वरिष्ठ अधिवक्ता भी हैं। याचिका में उन्होंने कानून को 'मृत' बताते हुए इसे गैरकानूनी घोषित करने की मांग की है।

चावला से पूछताछ में खुलेंगे कई पूर्व खिलाड़ियों व सटोरियों के राज

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

19 साल बाद लंदन से दिल्ली लाए गए सटोरिये संजीव चावला से पूछताछ में कई पूर्व भारतीय खिलाड़ियों, बड़े सटोरियों और दलालों के काले कारनामों से पर्दा उठ सकता है। डीसीपी क्राइम ब्रांच डॉ. जी राम गोपाल नाइक के मुताबिक क्रिकेट मैच फिक्सिंग के मास्टरमाइंड संजीव से कई महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है।

जुलाई 2013 में क्राइम ब्रांच ने मैच फिक्सिंग के इस केस में पूर्व दक्षिण अफ्रीकी कप्तान हैंसी क्रोनिए व संजीव चावला समेत छह लोगों को आरोपित बनाते हुए दिल्ली की एक निचली अदालत में आरोप पत्र दायर किया था। हैंसी क्रोनिए की 2002 में विमान हादसे में मौत हो चुकी है। इसके बाद बचे आरोपितों में संजीव समेत तीन बुकी व दो दलाल शामिल हैं। दो सटोरियों और एक दलाल को क्राइम ब्रांच ने कई साल पूर्व गिरफ्तार किया था, जिन्हें बाद में जमानत भी मिल गई। एक आरोपित मनोहर खट्टर अभी फरार है।

चार्जशीट में बताया गया था कि ब्रिटिश नागरिक चावला भारतीय खिलाड़ियों सहित कई अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों के साथ जुड़ा हुआ था। उनके नंबर कॉल डेटा रिकॉर्ड्स (सीडीआर) से पता चला था कि कई पूर्व भारतीय क्रिकेटर उसे लंदन में लगातार फोन कर रहे थे। पुलिस ने जनवरी से मार्च 2000 तक चावला के सीडीआर निकाले थे। उस समय भारत में खेले जाने वाली भारत-दक्षिण अफ्रीका श्रृंखला के मैच फिक्स करने की साजिश का पर्दाफाश हुआ था। इसके बाद चावला लंदन भाग गया, जिस कारण तत्कालीन भारतीय क्रिकेटरों को वैश्विक सट्टेबाज से जोड़ने वाले सीडीआर को अंजाम तक नहीं पहुंचाया जा सका था।

लंदन में 2001 में गिरफ्तार हुआ था चावला : क्राइम ब्रांच ने स्कॉटलैंड यार्ड से भी दस्तावेज जुटाए थे। वहां की एजेंसी ने 2001 में वहां के खिलाड़ियों से जुड़े एक और सट्टेबाजी रैकेट में चावला को गिरफ्तार किया था।

अंडरवर्ल्ड से संबंधों की भी होगी जांच

दुबई स्थित सट्टे के सिंडिकेट्स के साथ चावला के संबंधों के बारे में दिल्ली के पूर्व पुलिस कमिश्नर अजय राज शर्मा ने कहा था कि अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम के एक सदस्य द्वारा इस्तेमाल किए गए एक यूएई नंबर को शुरुआत में दिल्ली पुलिस द्वारा ट्रेस किया जा रहा था। क्राइम ब्रांच चावला से पूछताछ कर अंडरवर्ल्ड के साथ संबंधों की भी जांच करेगी। वहीं चावला के सहयोगियों में से एक कृष्ण कुमार (टी-सीरीज म्यूजिक ग्रुप) के फोन नंबर को सीधे तौर पर 2000 की शुरुआत में दुबई में सक्रिय अंडरवर्ल्ड के सदस्य सहेन हेथली के फोन नंबर से जोड़ा गया था।

1996 में पहली बार ब्रिटेन गया था चावला

प्रथम पृष्ठ से आगे

चावला दिल्ली का बिजनेसमैन था। उन दिनों उसकी गिनती देश के टॉप क्रिकेट मैच फिक्सरों में थी। क्राइम ब्रांच का कहना है कि चावला पहली बार 1996 में बिजनेस वीजा पर ब्रिटेन गया था। उससे हैंसी क्रोनिए की सीधी बात होती थी। चावला ने हैंसी से कहा था कि तीसरे टेस्ट में भारत की जीत सुनिश्चित करने के लिए अंतिम दिन अगर उसकी टीम ऑल आउट हो जाती है तो वह उसे 30 हजार डॉलर देगा। केस दर्ज होने के बाद हैंसी पर आजीवन क्रिकेट खेलने पर प्रतिबंध लग गया था। मैच फिक्सिंग में हैंसी के साथ हर्शल गिब्स व निकी बोए समेत दक्षिण अफ्रीका के कई खिलाड़ियों के नाम आए थे।

2000 में हुई थी क्रोनिए की मौत : एक जून 2002 को विमान हादसे में हैंसी क्रोनिए की मौत हो गई, जिससे मैच फिक्सिंग की जांच रुक गई थी। क्राइम ब्रांच ने विदेश मंत्रालय के जरिए लंदन की कोर्ट से चावला को सौंपने का अनुरोध किया था। कहा गया था कि चावला को तिहाड़ जेल में ठीक तरीके से रखा जाएगा। उसके स्वास्थ्य पर भी ध्यान रखा जाएगा। तब चावला ने तर्क दिया था कि भारत की जेल में उसकी जान को खतरा है। वहां उसके मावनाधिकार का हनन हो सकता है।

पूर्व आतंकी कमांडर अब्दुल्ला गजाली की मस्जिद में हत्या

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : कश्मीर के सबसे पुराने आतंकी कमांडरों में शुमार जमीयत-ए-अहल-हदीस के नेता अब्दुल गनी डार उर्फ अब्दुल्ला गजाली की गुरुवार को एक मस्जिद में हत्या कर दी गई। दोपहर बाद उसका खून से सना शव नमाजियों ने एक कोने में पड़ा देखा। फिलहाल, पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर छानबीन कर रही है। अब्दुल गनी डार उर्फ अब्दुल्ला गजाली की हत्या के कारणों का फिलहाल पता नहीं है।

सूत्रों ने बताया कि अब्दुल गनी डार दोपहर में ही मस्जिद में आया था। सीसीटीवी फुटेज से पता चलता है कि हेलमेट पहने एक युवक से उसका झगड़ा हुआ था। दोनों में हाथापाई कैमरे में कैद हो गई। हमले के बाद गजाली जमीन पर गिर पड़ा और हमलावर निकलने में कामयाब रहा। पुलिस थाना प्रभारी जहूर अहमद ने कहा कि कुछ संदिग्ध तत्वों की निशानदेही की गई है। गजाली आतंकी संगठन तहरीक-उल मुजाहिदीन का चीफ कमांडर रह चुका है। उसका कश्मीर में पांव पसार रहे अल-कायदा और आइएसजेके से भी जुड़ाव बताया जाता रहा है। उसके दामाद एजाज अहमद अहंगर उर्फ हुजैफा अल पाकिस्तानी को आइएसजेके का मुख्य सूत्रधार माना जाता है। गजाली की हत्या लालचौक के साथ सटे मैसूमा में स्थित उसी मस्जिद के भीतर हुई है, जिसके बाहर अप्रैल 2011 में एक शक्तिशाली आइईडी विस्फोट में जमीयत के तत्कालीन जम्मू कश्मीर प्रमुख मौलाना शौकत की हत्या हुई थी। मौलाना की हत्या की साजिश लश्कर ने रची थी और गजाली भी आरोपित था।

एक साल बाद भी पुलवामा हमले में दायर नहीं किया जा सका आरोपपत्र

नवीन नवाज, श्रीनगर

▶ मारे जा चुके हैं साजिश अैंजाम देने वाले सभी प्रमुख सूत्रधार

▶ हमले के अगले दिन हुई बारिश के कारण धुल गए थे कई अहम सुराग

आदिल के डीएनए की रिपोर्ट मिली 10 माह बाद

पुलवामा हमले में शामिल आत्मघाती आतंकी आदिल अहमद डार के डीएनए नमूनों की जांच पूरी हो चुकी है। हमले में कार और उसमें सवार आदिल के परखचे उड़ गए थे। आदिल के मांस के लोथड़े को घटनास्थल के आस-पास बिजली के तार, पेड़ों की शाखाओं और कार के मलबे से जमा किया था। इनका आदिल के पिता और मां के डीएनए से मिलान किया गया। गत दिसंबर में ही रिपोर्ट आई है और उसके मुताबिक आदिल डार की पुष्टि हो चुकी है।

देश को दहला देने वाले पुलवामा हमले को आज एक साल हो गया। इसके बावजूद अभी तक मामले में आरोपपत्र तक दायर नहीं किया जा सका है। साजिश को अंजाम देने वाले ज्यादातर सूत्रधार या तो ढेर हो चुके हैं या फिर पाकिस्तान में हैं। ऐसे में जिंदा सुबूत की अभी तलाश है। हालांकि जांच एजेंसियों के पास आत्मघाती हमलावर आदिल का वीडियो है।

जांच से जुड़ी एजेंसियों के अनुसार, फॉरेंसिक रिपोर्ट मिल चुकी है, लेकिन हमले में इस्तेमाल उच्च गुणवत्ता वाले विस्फोटक की सही प्रकृति और स्रोत का पता नहीं चल पाया है। इसका कारण हमले के अगले दिन हुई बारिश में कई अहम सुराग धुलना बताया जा रहा है।

14 फरवरी 2019 को श्रीनगर-जम्मू हाईवे पर पुलवामा में जैश के आत्मघाती आतंकी आदिल अहमद डार ने सीआरपीएफ की बस पर विस्फोटकों से भरी कार के साथ टक्कर मारी थी। इसमें 40 जवान शहीद हो गए थे। हमले में आदिल डार के भी परखच्चे उड़ गए थे।

90 दिन में आरोपपत्र दायर करना होता है : गैर कानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम के तहत जांच एजेंसी को 90 दिन के भीतर अदालत में आरोपपत्र दायर करना होता है। जांच से जुड़े अधिकारियों की मानें अगर आरोपित या संदिग्ध की मौत हो चुकी हो तो आरोपपत्र दायर करने की समय अवधि को बढ़ाया जा सकता है। पठानकोट एयरबेस का हवाला देते हुए संबंधित अधिकारी कहते हैं कि वह हमला भी जैश ने करवाया था। दोनों की साजिश पाक में ही रची गई। पठानकोट हमले में शामिल चारों आतंकी मारे गए थे और आरोपपत्र लगभग एक साल के बाद दायर किया। उसमें मसूद अजहर व उसके तीन अन्य साथियों को आरोपित बनाया है। वे सभी पाकिस्तान में हैं।

अंजाम तक पहुंचे मास्टरमाइंड : पुलवामा की साजिश को अंजाम देने वाला पाकिस्तानी आतंकी गाजी रशीद 18 फरवरी 2019 को मारा गया था। मुदस्सर अहमद खान मार्च 2019 और सज्जाद खान जून 2019 में मारा गया। मुदस्सर ने ही विस्फोटकों को बंदोबस्त किया था। हमले में इस्तेमाल कार सज्जाद की थी। यह कार चार फरवरी 2018 को खरीदी गई थी। मुदस्सर और सज्जाद पुलवामा के रहने वाले थे। आदिल भी पुलवामा के गुंडीबाग का रहने वाला था।

सभी आतंकी मारे जा चुके हैं : जांच से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, हमले को अमलीजामा पहनाने में लिप्त सभी प्रमुख आतंकी मारे जा चुके हैं। आरोपपत्र में सभी आरोपितों की भूमिका का विस्तार से जिक्र करना होता है। कुछ संदिग्धों को चिह्नित करते हुए उनकी भूमिका के आधार पर जल्द आरोपपत्र दायर करेंगे। साजिश में मसूद अजहर और पाकिस्तान में बैठे साथी भी शामिल थे। आरोप पत्र में पाकिस्तान की भूमिका का उल्लेख होगा। जल्द ही आरोपपत्र दाखिल होगा।

कुछ कड़ियां जोड़नी अभी बाकी : सूत्रों के अनुसार, फोरेंसिक रिपोर्ट आ चुकी है। विस्फोटक कहां से कैसे आया? पैसा किस स्रोत से आया? अभी इन कड़ियों को जोड़ना है। पुलवामा हमले में पाक सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आइएसआइ का हाथ है। अधिकारियों ने मुंबई हमले का जिक्र करते हुए कहा कि कसाब जिंदा पकड़ा गया था। पुलवामा की साजिश में शामिल आतंकी ढेर हो चुके हैं। गत माह त्राल में मारा गया कारी यासिर मददगार साबित हो सकता था, लेकिन वह भी जिंदा नहीं मिला।

पुलवामा का एक साल

हड़ताल, आजादी व अलगाववाद पर नहीं नए कश्मीर पर होती है बहस, अब सेना के करीब आए कश्मीरी, मुश्किल आने पर करते हैं संपर्क, पुलवामा हमला और अनुच्छेद 370 हटने से बदले समीकरण

अतीत को भुला तरक्की की राह पर नया कश्मीर

नवीन नवाज, श्रीनगर

कश्मीर की आबोहवा में बदलाव को सीधा महसूस किया जा सकता है। पहले की तरह हड़ताल, आजादी और अलगाववाद से जुड़े मुद्दों पर अब कोई बात करता नजर नहीं आता। अगर कभी दो लोगों के बीच इन मुद्दों पर बहस शुरू भी होती है तो यह कहकर बात खत्म हो जाती है, बीते 70 वर्षों में क्या पाया, सिर्फ गंवाया है। अब पाने के वक्त है इसलिए अतीत को भुला अमन, ऐसे में अगर कुछ करना है तो यह करो कि जिहादियों के दुष्प्रचार से गुमराह हो तबाही के रास्ते पर निकले युवकों को वापस लाने में सहयोग करो।

बीते एक साल में कश्मीर में बहुत कुछ बदल गया है। पुलवामा हमले और अनुच्छेद-370 हटने के बाद लोगों की सोच बदली है। एक दुकानदार जावेद नक्शबंदी ने कहा कि कश्मीर में आज जो हो रहा है अच्छा हो रहा है। क्योंकि हमने सबकुछ खोया है। लाल दस्तकारी की दुकान चलाने वाले जावेद कहते हैं कि पुलवामा हमला जब हुआ तो हम बहुत डर गए थे। हमें लगता था कि कश्मीर कभी नहीं बदलेगा। फिर पिछले अगस्त आया और अनुच्छेद-370 को ले उड़ा और कश्मीर बदलने लगा। आज किसी को पूछोगे हड़ताल कब है, तो जवाब मिलेगा जाओ अपना काम करो। जबकि पहले हड़ताल की अफवाह पर ही कारोबार बंद हो जाते थे।

आइएएस बनने का जुनून

शिक्षाविद् मुहम्मद राही ने कहा कि क्या यह बदलाव नहीं है। आतंकवाद से सबसे अधिक ग्रस्त रहे दक्षिण कश्मीर के शोपियां जिले में इन दिनों युवाओं में भारतीय प्रशासनिक सेवा और कश्मीर प्रशासनिक सेवा के अधिकारी बनने का जुनून है। जिला प्रशासन शोपियां ने युवाओं को अधिकारी बनाने के लिए पहल की है।

केंद्र से वादे पूरे करने की दुहाई : पत्रकार रमीज ने कहा कि कश्मीर के आज स्वायत्तता, स्वशासन, आतंकवाद व पाकिस्तान जैसे मुद्दों पर नहीं रोजगार-विकास से जुड़े मुद्दों पर बातचीत होती है। हां, बहस में कई बार लोग पुनर्गठन अधिनियम के तहत जम्मू-कश्मीर के विभाजन पर जरूर रोष जताते हैं। इसके साथ वह केंद्र सरकार को अपने वादों को पूरा करने की दुहाई देते हुए कहते हैं कि चलो अब यहां रोज-रोज उठाने वाले जनाजे बंद होंगे। क्योंकि कोई पुलवामा जैसा हमला नहीं चाहता।

70 वर्षों में कश्मीरियों ने सिर्फ गंवाया है : सैफुल्लाह जो पहले आतंकवाद की राह पर चल पड़े थे, लेकिन जब हकीकत पता चली तो घर लौट आए। वह कहते हैं कि पुलवामा हमला और उसके बाद अनुच्छेद-370 की समाप्ति कश्मीर के लिए वरदान साबित हुई है। जिस समय पुलवामा हमला हुआ तो यहां कई लोग कहते थे कि कश्मीर अब अफगानिस्तान बन रहा है, इसे रोको। अब वही लोग कहते हैं कि 70 वर्षों में कश्मीरियों ने सिर्फ गंवाया है।

कश्मीरी हमेशा से ही राष्ट्रभक्त : डेमोक्रेटिक पार्टी नेशनलिस्ट के अध्यक्ष और पूर्व मंत्री गुलाम हसन मीर ने कहा कि कश्मीरी हमेशा से ही राष्ट्रभक्त रहे हैं। लेकिन अलगाववाद की सियासत से ही कश्मीरी तंग थे। आपने देखा होगा कि अब कश्मीर के कई नए-पुराने सियासतदान पूर्ण राज्य, रोजगार और विकास की बात कर रहे हैं। उन्हें पता है कि यही मुद्दे उन्हें यहां प्रासंगिक रखेंगे, अन्यथा लोग उन्हें दरकिनार कर देंगे। समाजसेवी सलीम रेशी ने कहा कि पहले जब हम आम लोगों के बीच जाते थे तो पता चलता था कि लड़के जिहादी बन रहे हैं। जबकि अब कहा जाता है कि बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान दो। नंबर अच्छे होने चाहिए। आतंक की राह पर भटके युवाओं को वापस लाने के लिए लोग खुद पुलिस व सेना से संपर्क करते हैं।

पुंछ के जंगलों में आतंकी ठिकाना ध्वस्त

जागरण संवाददाता, पुंछ

पुंछ जिले के दूरदराज के इलाके में मंगनाड और खनेतर टॉप के जंगली इलाके में तलाशी अभियान के दौरान सुरक्षाबलों ने एक आंतकी ठिकाना ध्वस्त कर दिया। इसके साथ ही आतंकी ठिकाने से हथियार भी बरामद कर लिए हैं। इलाके में संदिग्धों के देखे जाने की सूचना के बाद पिछले तीन दिन से सुरक्षाबलों और पुलिस जवान संयुक्त सर्च ऑपरेशन चलाए हुए थे।

उल्लेखनीय है कि गत दिनों नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तानी सेना द्वारा की गई गोलाबारी के बाद जंगली इलाकों में संदिग्ध देखे जाने की सूचनाएं मिल रही थीं। इसके बाद सेना की 39 राष्ट्रीय राइफल बटालियन और पुलिस की स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप ने खनेतर और मंगनाड टॉप के जंगली इलाके की घेराबंदी कर संयुक्त तलाशी अभियान चलाया था। गुरुवार शाम को ऑपरेशन के तीसरे दिन सुरक्षाबलों ने कनुइया और मंगनाड टॉप के मध्य जंगली इलाके से आंतकियों द्वारा छुपाए हथियार एक एके-47 राइफल, एक एके-47 की मैगजीन एक, एक पिस्टल और पिस्टल की मैगजीन बरामद की है।

पुलिस के अनुसार जहां से हथियार बरामद किए गए हैं वह इलाका काफी दूर है। जंगल घना और कंटिला होने के कारण अभी सुरक्षाबल जंगली इलाकों से बाहर नहीं आए हैं। इसलिए तलाशी अभियान फिलहाल खत्म नहीं हुआ है।

पाक सेना ने दरगाह को निशाना बना दागे मोर्टार : पाकिस्तानी सेना ने अपनी नापाक हरकतों को दोहराते हुए पुंछ जिले के किरनी सेक्टर में बुधवार-गुरुवार की मध्य रात्रि को 1:35 बजे नियंत्रण रेखा पर संघर्ष विराम तोड़ने हुए मोर्टार शेल दागने सहित गोलाबारी की। पाकिस्तानी सेना के निशाने पर पुंछ नगर के गुंतरियां इलाके में नियंत्रण रेखा के नजदीक पुरानी एवं ऐतिहासिक साई मीरा बक्श दरगाह थी। गोलाबारी से सीमा पर किसी भी प्रकार का जानी नुकसान नहीं हुआ।